सुखवाद : हेनरी सिजविक

बुद्धिमूलक उपयोगितावाद (Rational Utilitarianism) –

हेनरी सिजविक अपनी पुस्तक 'दि मैथड्स ऑफ एथिक्स' में नैतिक आदर्श के संबंध में गहराई से विचार करते हैं और कहते हैं कि सुख को नैतिक आदर्श के रूप में स्वीकार करने के लिये किसी तार्किक युक्ति की आवश्यकता ही नहीं है। सुख या आनन्द को जीवन का लक्ष्य मानना चाहिये – यह तो बिना किसी तर्क के ही स्पष्ट है। अतिसाधारण बुद्धिवाला व्यक्ति भी कह सकता है कि सुख प्राप्त करना चाहिये तथा दुःख से दूर रहना चाहिये। दुःख को केवल तब सहना चाहिये जब वैसा करके अधिक सुख अर्जित किया जा सके। सिजविक सुख जैसे लक्ष्य का ज्ञान आंतरिक बोध के द्वारा संभव मानते हैं, इसीलिये उनके सुखवाद को अन्तर्बोधपरक सुखवाद या अंतर्बोधक उपयोगितावाद भी कहा जाता है। और चूंकि वे तार्किक युक्तियों के द्वारा ही यह सिद्ध करना चाहते हैं कि उपयोगितावाद के लिये आत्मप्रेम तथा परोपकारिता दोनों आवश्यक है, इसलिए उनके उपयोगितावाद को तार्किक या बौद्धिक उपयोगितावाद भी कहा जाता है। उनके अनुसार स्वार्थपरक सुखवाद और परार्थपरक सुखवाद दोनों बौद्धिक, युक्तिसंगत तथा स्वीकार्योग्य है।

सिजविक का विचार है कि संसार के सभी पदार्थ स्वतः बांधनीय नहीं है, बल्कि वे किसी अन्य लक्ष्य की प्राप्ति के साधन है, इसलिए बांधनीय है। अतः संसार के सभी पदार्थों का साधन मूल्य है। एकमात्र सुख ही स्वतः मूल्यवान है। यह किसी अन्य लक्ष्य का साधन नहीं, प्रत्युत प्रत्येक कर्म का स्वयं लक्ष्य है। अतः यह स्वतः शुभ है। सुख ही अन्तिम बांधनीय वस्तु है। ज्ञान, सौन्दर्य तथा सद्गुण सुख प्राप्ति के साधन है। यह हमें बुद्धि बतलाती है कि सुख ही वास्तविक लक्ष्य है। ऐसा निर्देश हमें बुद्धि के द्वारा मिलता है। अतः सुख ही चरम लक्ष्य है, जिसकी प्राप्ति की चेष्टा करनी चाहिये। जीवन के चरम लक्ष्य के विषय में सिजविक के विचार मिल के समान है। पर सिजविक मनोवैज्ञानिक सुखवाद का समर्थक नहीं है। इसके अनुसार सुख मानव-कर्म का सदा स्वाभाविक तथा सामान्य लक्ष्य नहीं है। यदि सुख के भाव की प्रबलता लक्ष्य प्राप्ति में बाधक होती है, तो सुख की प्राप्ति करने की सर्वोत्तम विधि है सुख को विस्मृत कर देना। अतः मिल की भांति यह सुख को इसलिए बांधनीय नहीं मानता कि सभी इसकी इच्छा

[illegible] बुद्धि की नैतिक [illegible] का आत्मबोध [illegible] आवश्यक है। यह [illegible] सुख [illegible] है। इस [illegible] का अनुभव के द्वारा [illegible] बुद्धि के आत्मबोध द्वारा होता है। [illegible] कुछ भी अनुभव क्यों न हो उसमें [illegible] संभव नहीं है। इसका ज्ञान बुद्धि के आत्मबोध द्वारा ही सम्भव है। इस प्रकार सिजविक मिल के अनुभवमूलक सुखवाद [illegible] बुद्धिमूलक उपयोगितावाद का प्रवर्तक है। इसने सुखवाद, [illegible] और बुद्धिवाद के समन्वय की चेष्टा की है। [illegible] निर्णय में अन्त: अनुभूतिवादी है।

नैतिक बुद्धि अर्थात् अन्तःकरण से केवल [illegible] ही आत्मबोध नहीं होता, बल्कि सुख लक्ष्य-प्राप्ति के साधन [illegible] परोपकारिता और न्याय का भी बोध होता है। वे कहते हैं कि [illegible] प्रवृत्ति से प्रेरित होकर तत्काल क्षणिक सुख प्राप्त कर लेना ही सच्चे अर्थ में आत्मकल्याण को सिद्ध कर लेना नहीं है। यह सही [illegible] प्राकृतिक वासना की तृप्ति से तत्काल सुख प्राप्त कर लिया जा सकता है। पर ऐसा सुख क्षणिक तथा वर्तमान तक ही सीमित होता है। [illegible] मनुष्य के द्वारा अपने जीवन को केवल वर्तमान में ही सीमित कर देना बुद्धिमानी नहीं है। बुद्धिमानी तो इसमें है कि उसके द्वारा वर्तमान का [illegible] इस तरह किया जाय कि उसका पूरा भविष्य ही मंगलमय हो सके। बुद्धि तो दूरदर्शिता अपनाने की सीख ही देती है। इसलिये बुद्धि आत्म-कल्याण के लिये भी दूरदर्शिता पर आधारित नियामक सिद्धांत ही प्रतिपादित करती है। अत: यह दूरदर्शिता निश्चय ही दूरदर्शिता के लिये [illegible]

है आवश्यक है।

मानव समाज के सभी व्यक्तियों को समान महत्त्व देना नैतिकता के लिये परम आवश्यक है। इसके लिए वे समानता के साथ योग्यता को जोड़ना भी आवश्यक मानते हैं, क्योंकि उनके अनुसार ऐसा करना ही न्यायसंगत है। अत: सिजविक न्यायसम्मत नियामक सिद्धांत प्रस्तुत करना चाहते हैं। जहाँ एक ओर सिजविक सुख की अनुभूति को जीवन का चरम आदर्श मानने के लिए अंतर्बोध या अंतर्दृष्टि को ज्ञान का स्रोत मानते हैं, वहीं दूसरी ओर वे न्यायोचित आत्मकल्याणवाद तथा न्यायोचित परकल्याणवाद जैसे सिद्धांतों को स्थापित करने के लिये तर्कबुद्धि का भी सहारा लेते हैं। इसलिए उनके सुखपरक उपयोगितावाद को एक दृष्टि से अन्तर्दृष्टिपरक तो एक दूसरी दृष्टि से बौद्धिक माना जा सकता है।

आलोचना –

सिजविक का मत उपयोगितावाद और बुद्धिवादी अन्त: अनुभूतिवाद का असंगत मेल है। अन्त:करण या नैतिक बुद्धि ही परमशुभ का ज्ञान देती है। यह परम शुभ 'सुख' है, पर 'सुख' की प्राप्ति से बुद्धि को अनिवार्यत: संतोष नहीं होता। अत: बुद्धि जिस लक्ष्य का ज्ञान देती है, वह अलौकिक है।

इसके अतिरिक्त कर्मों के मूल्यांकन की सिजविक के मत में दो नीतियाँ मिलती हैं। उसने सुख को ही परमशुभ माना है। अत: सुख ही नैतिक मापदण्ड है। पर सुख के अतिरिक्त सुसंस्कृत बुद्धियुक्तता आदि को भी उसने लक्ष्य माना है। वास्तव में सीजविक ने सुखवाद की नींव बुद्धिवाद के आधार पर प्रबल बनाने का प्रयत्न किया है पर इससे कई कठिनाइयाँ आ पड़ी हैं। सुख नैतिक प्रकृति का संकेत हो सकता है, जीवन का लक्ष्य नहीं।

प्र. सिजविक का सुखवाद नैतिक है या मनोवैज्ञानिक? आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।

प्र. बुद्धिमूलक उपयोगितावाद को समझाइए।